

‘माँ जब मैं बड़ी हो जाऊँगी’

जितेन्द्र कुमार पाटीदार*

माँ जब मैं बड़ी हो जाऊँगी
 टीचर बन कर सबको पढ़ाऊँगी
 सब बच्चों को स्कूल बुलाऊँगी
 स्कूल में सबको बिठाऊँगी
 सबको बैठाकर मिलवाऊँगी
 उनके बीच भेद-भाव मिटाऊँगी
 माँ जब मैं बड़ी हो जाऊँगी
 टीचर बन कर सबको पढ़ाऊँगी
 सब बच्चों को मदद करना सिखाऊँगी
 एक-दूसरे की संस्कृति भी समझाऊँगी
 उनमें एकता की भावना लाऊँगी
 ऐसे ही समूह में काम करना सिखाऊँगी
 माँ जब मैं बड़ी हो जाऊँगी
 टीचर बन कर सबको पढ़ाऊँगी
 कक्षा में पाठ मैं पढ़ाऊँगी
 सब बच्चों की सहभागिता बढ़ाऊँगी
 सिखाने के नए-नए तरीके अपनाऊँगी
 सबकी सीखने में रुचि बढ़ाऊँगी

माँ जब मैं बड़ी हो जाऊँगी
 टीचर बन कर सबको पढ़ाऊँगी
 मैं बच्चों की दोस्त बनूँगी
 उनमें टीचर का भय दूर करूँगी
 सभी विषयों में रुचि बढ़ाऊँगी
 आर्ट-क्राफ्ट व खेल-कूद करना जरूर सिखाऊँगी
 माँ जब मैं बड़ी हो जाऊँगी
 टीचर बन कर सबको पढ़ाऊँगी
 पढ़ाते समय निरंतर आकलन करूँगी
 कमजोर बच्चों की समस्याओं का हल भी बताऊँगी
 प्रतिभाशाली बच्चों को आगे बढ़ाऊँगी
 सब बच्चों का ध्यान रखूँगी
 माँ जब मैं बड़ी हो जाऊँगी
 टीचर बन कर सबको पढ़ाऊँगी
 बच्चों को पुस्तकालय ले जाऊँगी
 पुस्तकों से परिचित कराऊँगी
 पुस्तकें ज्ञान का भंडार हैं, यह समझाऊँगी
 पुस्तकालय का उपयोग करना सिखाऊँगी

* सहायक प्रोफेसर, अध्यापक शिक्षा विभाग, एन. सी. ई. आर. टी., नयी दिल्ली 110016

माँ जब मैं बड़ी हो जाऊँगी
टीचर बन कर सबको पढ़ाऊँगी
सबको कंप्यूटर लैब ले जाऊँगी
पर तार न छूना बताऊँगी
कंप्यूटर का प्रयोग करना सिखाऊँगी
इसी तरह आई सी टी समझाऊँगी

माँ जब मैं बड़ी हो जाऊँगी
टीचर बन कर सबको पढ़ाऊँगी
माँ मैं अपना आकलन करूँगी
अपना पेशागत ज्ञान बढ़ाऊँगी
सब साथियों के साथ काम करूँगी
अपने स्कूल का नाम रोशन करूँगी

माँ जब मैं बड़ी हो जाऊँगी
टीचर बन कर सबको पढ़ाऊँगी

स्कूल में नयी-नयी गतिविधियाँ कराऊँगी
उनमें बच्चों के माता-पिता को बुलाऊँगी
उन्हें बच्चों की गतिविधियों से अवगत कराऊँगी
ऐसे ही स्कूल-समुदाय को साथ लाऊँगी
माँ जब मैं बड़ी हो जाऊँगी
टीचर बन कर सबको पढ़ाऊँगी

ज्ञान का दीप जलाऊँगी
देश को सबसे आगे ले जाऊँगी
विश्व में देश की पहचान कराऊँगी
सबको यह बात मैं समझाऊँगी

माँ जब मैं बड़ी हो जाऊँगी
टीचर बन कर सबको पढ़ाऊँगी॥